https://shikshabodh.in/

SHIKSHA BODH
(The Journal of Education and Humanities)
A quarterly, peer-reviewed/refereed journal
ISSN: 3139-5880 IMPACT FACTOR: 6.50
VOLUME-1|ISSUE-3|July-September, 2026

उच्च शिक्षा में कौशल विकास की भूमिका

***बाबुचन्द प्रसाद**
व्याख्याता
डॉसर्वपल्ली राधाकृष्णन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय .,
सुकरीगढ़ा, लारी, रामगढ़, झारखंड

सार (Abstract)

वर्तमान वैश्विक एवं तकनीकी परिवेश में उच्च शिक्षा का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है। आज उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को विषयगत एवं सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि उन्हें बदलते सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी और व्यावसायिक परिवेश के अनुरूप सक्षम बनाना भी है। रोजगार के स्वरूप में हो रहे परिवर्तन, डिजिटल तकनीक का विस्तार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालन, उद्यमिता तथा ज्ञानसाथ व्यावहारिक एवं -आधारित अर्थव्यवस्था ने विद्यार्थियों के लिए पारंपरिक शैक्षणिक योग्यता के साथ- रोजगारपरक कौशलों की आवश्यकता को अत्यधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। कौशल विकास से आशय केवल किसी विशेष व्यवसाय से संबंधित तकनीकी दक्षता से नहीं है, बल्कि इसमें संचार कौशल, समस्यासमाधान क्षमता-, आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, डिजिटल साक्षरता, नेतृत्व, सहयोग, समयप्रबंधन-, निर्णय लेने की क्षमता, उद्यमशीलता तथा निरंतर सीखने की प्रवृत्ति भी सम्मिलित हैं। विश्व बैंक भी वर्तमान श्रम बाजार के संदर्भ में संज्ञानात्मक, सामाजिकभावनात्मक-, तकनीकी, उद्यमशीलता तथा डिजिटल कौशलों को महत्वपूर्ण मानता है। भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने उच्च शिक्षा को अधिक बहुविषयक, लचीला, कौशलआधारित एवं - में रोजगारोन्मुख बनाने पर विशेष बल दिया है। नीति व्यावसायिक शिक्षा को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ने तथा उच्च शिक्षा संस्थानों में कौशल, इंटर्नशिप एवं अप्रेंटिसशिप जैसी व्यवस्थाओं को बढ़ावा देने की दिशा स्पष्ट की गई है। प्रस्तुत शोधपत्र में उच्च शिक्षा में - कौशल विकास की आवश्यकता, उसकी भूमिका, रोजगारपरकता में योगदान, वर्तमान चुनौतियों तथा कौशलआधारित उच्च शिक्षा - को प्रभावी बनाने के उपायों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि उच्च शिक्षा को ज्ञान और कौशल के संतुलित समन्वय की दिशा में आगे बढ़ना होगा, ताकि विद्यार्थी केवल डिग्रीधारी न बनें, बल्कि सक्षम, आत्मनिर्भर, रोजगार योग्य और जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित हो सकें।

मुख्य शब्द- कौशल विकास, उच्च शिक्षा, रोजगारपरकता, व्यावसायिक शिक्षा, डिजिटल कौशल, उद्यमिता, Employability, Skill Development

1. प्रस्तावना :

इक्कीसवीं सदी में शिक्षा की अवधारणा व्यापक रूप से परिवर्तित हुई है। औद्योगिक एवं तकनीकी विकास, वैश्वीकरण, डिजिटल क्रांति तथा ज्ञानआधारित अर्थव्यवस्था ने शिक्षा के उद्देश्यों को नए संदर्भ प्रदान किए हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थी से केवल यह अपेक्षा नहीं - एवंकी जाती कि वह किसी विषय के तथ्यों सिद्धांतों को याद रखे, बल्कि उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह प्राप्त ज्ञान को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में लागू कर सके, समस्याओं का समाधान कर सके, नई परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल सके तथा निरंतर सीखता रहे। उच्च शिक्षा किसी भी राष्ट्र के मानव संसाधन विकास का महत्वपूर्ण आधार है। विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय ऐसे मानव संसाधन तैयार करते हैं जो भविष्य में शिक्षक, प्रशासक, वैज्ञानिक, उद्यमी, तकनीकी विशेषज्ञ, सामाजिक

कार्यकर्ता तथा विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में योगदान देते हैं। इसलिए उच्च शिक्षा की गुणवत्ता का मूल्यांकन केवल परीक्षा परिणाम अथवा डिग्री प्राप्त करने की संख्या से नहीं किया जा सकता। इसके लिए यह देखना भी आवश्यक है कि उच्च शिक्षा विद्यार्थियों में कौनकौन सी क्षमताओं का विकास कर रही है।-

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के Learning Outcomes & Based Curriculum Framework में भी उच्च शिक्षा को ज्ञान, समझ, कौशल, दृष्टिकोण एवं मूल्यों के अपेक्षित समंतदपदह वनजबवउमे से जोड़ने पर बल दिया गया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को ऐसी क्षमताओं से युक्त करना है जिन्हें वे शिक्षा के बाद वास्तविक जीवन में उपयोग कर सकें।

इसी संदर्भ में कौशल विकास उच्च शिक्षा का एक अनिवार्य घटक बनकर उभरा है। यदि विद्यार्थी के पास उच्च शैक्षणिक योग्यता तो है, लेकिन वह प्रभावी ढंग से संवाद नहीं कर सकता, डिजिटल संसाधनों का उपयोग नहीं कर सकता, समस्या का विश्लेषण नहीं कर सकता अथवा अपने ज्ञान को व्यावहारिक कार्य में परिवर्तित नहीं कर सकता, तो उसकी रोजगारपरकता सीमित हो सकती है।

अतः वर्तमान समय की उच्च शिक्षा को "Degree&oriented Education"से आगे बढ़कर "Knowledge, Skill and Competency & oriented Education" की ओर बढ़ने की आवश्यकता है।

2. अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

1.उच्च शिक्षा में कौशल विकास की आवश्यकता एवं महत्त्व का विश्लेषण करना।

2.विद्यार्थियों की रोजगारपरकता बढ़ाने में कौशल विकास की भूमिका का अध्ययन करना।

3.उच्च शिक्षा में तकनीकी एवं गैर तकनीकी-कौशलों की आवश्यकता को स्पष्ट करना।

4.राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में कौशलआधारित उच्च शिक्षा की संभावनाओं का विश्लेषण करना।-

5.उच्च शिक्षा संस्थानों में कौशल विकास के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।

6.कौशलको अधिक प आधारित उच्च शिक्षा-ृभावी बनाने के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

3. शोधपद्धत-ि:

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। अध्ययन में मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विभिन्न आधिकारिक दस्तावेजों, National Credit Framework (NCrF), उच्च शिक्षा एवं कौशल विकास से संबंधित सरकारी दस्तावेजों तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की प्रकाशित सामग्री का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन में कौशल विकास को केवल व्यावसायिक प्रशिक्षण तक सीमित न रखते हुए तकनीकी कौशल, डिजिटल कौशल, संचार कौशल, आलोचनात्मक चिंतन, समस्यासमाधान-, नेतृत्व, सहयोग, रचनात्मकता तथा उद्यमशीलता जैसे व्यापक आयामों के संदर्भ में देखा गया है।

4. साहित्य समीक्षा :

उच्च शिक्षा एवं कौशल विकास के संबंध में राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्याप्त विमर्श उपलब्ध है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को अधिक समग्र, बहुविषयक, व्यावहारिक एवं कौशलउन्मुख बनाने की आवश्यकता को रेखांकित किया है। नीति में -को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ने तथा विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के व्य व्यावसायिक शिक्षा ावहारिक अनुभव प्रदान करने पर बल दिया गया है। UGC के अनुसार गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल विषयविशेष का ज्ञान प्रदान करना नहीं-, बल्कि विद्यार्थियों में बौद्धिक जिज्ञासा, रचनात्मकता, नैतिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा 21वीं सदी की आवश्यक क्षमताओं का विकास करना भी है। UGC की वर्तमान पहलों में National Credit Framework, Academic Bank of Credits, multidisciplinary education तथा Curriculum and Credit Framework जैसे प्रावधान इसी व्यापक परिवर्तन का हिस्सा हैं। National Credit Framework शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण, कौशल, अनुभवात्मक अधिगम तथा विभिन्न प्रकार के learning pathways को एक व्यापक credit framework में जोड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। इससे शिक्षा को अधिक लचीला एवं विद्यार्थीकेंद्रित बनाने की संभावना बढ़ती है। अंतरराष्-ट्रीय स्तर पर भी उच्च शिक्षा और कौशल विकास को

रोजगार एवं आर्थिक विकास से जोड़कर देखा जा रहा है। विश्व बैंक के अनुसार वर्तमान श्रम बाजार में foundational एवं higher & order cognitive skills, socio & emotional skills, specialized technical and entrepreneurial skills तथा digital skills का महत्व बढ़ रहा है। इस प्रकार उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट होता है कि उच्च शिक्षा और कौशल विकास को अलगक उपयुक्त है।अलग क्षेत्रों के रूप में देखने के बजाय दोनों को परस्पर पूरक रूप में समझना अधि-

5. उच्च शिक्षा में कौशल विकास की भूमिका (Role of Skill Development in Higher Education) .

5.1 रोजगारपरकता में वृद्धि:

उच्च शिक्षा में कौशल विकास का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थियों की रोजगारपरकता (Employability) को बढ़ाना है। रोजगारपरकता से आशय केवल नौकरी प्राप्त करने की क्षमता से नहीं है, बल्कि नौकरी प्राप्त करने, उसे प्रभावी ढंग से करने, नई जिम्मेदारियाँ ग्रहण करने तथा बदलती परिस्थितियों के अनुसार अपने कौशल को विकसित करने की क्षमता से है।

आज नियोक्ता ऐसे युवाओं की अपेक्षा करते हैं जो विषयगत ज्ञान के साथसमाधान-साथ समस्या-, संचार, टीमवर्क, डिजिटल दक्षता और निर्णय लेने की क्षमता रखते हों। इसलिए उच्च शिक्षा संस्थानों को पाठ्यक्रम में ऐसे अवसर उपलब्ध कराने चाहिए जिनमें विद्यार्थी वास्तविक परिस्थितियों में अपने ज्ञान एवं कौशल का प्रयोग कर सकें।

5.2 तकनीकी एवं डिजिटल कौशल का विकास:

डिजिटल परिवर्तन ने लगभग प्रत्येक व्यवसाय और पेशे को प्रभावित किया है। शिक्षा, बैंकिंग, स्वास्थ्य, प्रशासन, व्यापार, संचार, मीडिया तथा उद्योगों में डिजिटल तकनीक का प्रयोग तेजी से बढ़ा है। इस परिस्थिति में विद्यार्थियों के लिए केवल कंप्यूटर चलाना पर्याप्त नहीं है। उन्हें डिजिटल सूचना का मूल्यांकन, ऑनलाइन सहयोग, डिजिटल संचार, डेटा का आधारभूत विश्लेषण, साइबर सुरक्षा संबंधी जागरूकता तथा उभरती तकनीकों के जिम्मेदार उपयोग की समझ भी आवश्यक है। उच्च शिक्षा संस्थानों में डिजिटल कौशल को विषय विशेष के साथ जोड़ने से विद्यार्थी भविष्य-की कार्यव्यवस्था के लिए अधिक तैयार हो सकते हैं।-

5.3 संचार कौशल का विकास:

किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए प्रभावी संचार अत्यंत महत्वपूर्ण है। विद्यार्थी के पास विषय का अच्छा ज्ञान होने के बावजूद यदि वह अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं कर पाता, तो उसके व्यावसायिक विकास में कठिनाई हो सकती है। उच्च शिक्षा में presentation, group discussion, seminar, debate, interview, report writing, academic writing तथा interpersonal communication जैसी गतिविधियों को नियमित रूप से बढ़ावा दिया जाना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण के संदर्भ में यह और भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक शिक्षक को केवल विषय का ज्ञान नहीं बल्कि उसे सरल, प्रभावी एवं विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रस्तुत करने की क्षमता भी चाहिए।

5.4 आलोचनात्मक चिंतन एवं समस्यासमाधान-:

आज के जटिल सामाजिक एवं व्यावसायिक परिवेश में अनेक समस्याओं का समाधान किसी एक पुस्तक या निर्धारित उत्तर से संभव नहीं है। विद्यार्थियों को परिस्थितियों का विश्लेषण करना, विभिन्न विकल्पों पर विचार करना तथा तार्किक आधार पर निर्णय लेना सीखना आवश्यक है। इसके लिए उच्च शिक्षा में case study, project based learning, problem based learning, field study तथा experiential learning जैसी विधियों का प्रयोग उपयोगी हो सकता है। UGC के learning outcomes आधारित दृष्टिकोण में भी विद्यार्थी द्वारा अर्जित ज्ञान एवं कौशल को प्रदर्शित करने योग्य learning outcomes पर जोर दिया गया है।

5.5 उद्यमिता एवं आत्मनिर्भरता:

कौशल विकास का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि रोजगार सृजन की क्षमता विकसित करना भी होना चाहिए। भारत जैसे विशाल युवा जनसंख्या वाले देश में उद्यमिता उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण आयाम बन सकती है। विद्यार्थियों को business idea development, financial literacy, digital marketing, communication, project management तथा entrepreneurship से संबंधित आधारभूत जानकारी दी जा सकती है। उच्च शिक्षा संस्थानों में incubation centres, entrepreneurship cells तथा mentoring programmes को बढ़ावा देने से विद्यार्थियों को अपने विचारों को व्यावहारिक

रूप देने में सहायता मिल सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी उच्च शिक्षा संस्थानों में incubation तथा industry collaboration के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास के अवसर बढ़ाने की दिशा का उल्लेख किया गया है।

5.6 सॉफ्ट स्किल्स का विकास:

तकनीकी दक्षता के साथ soft skills भी अत्यंत आवश्यक हैं। इनमें नेतृत्व, टीमवर्क, समयप्रबंधन-, आत्मविश्वास, सकारात्मक दृष्टिकोण, अनुकूलन क्षमता, भावनात्मक समझ तथा professional ethics आदि सम्मिलित हैं। एक सक्षम कर्मचारी या शिक्षक केवल तकनीकी रूप से दक्ष नहीं होता, बल्कि वह सहकर्मियों, विद्यार्थियों, अधिकारियों एवं समुदाय के साथ प्रभावी संबंध स्थापित करने में भी सक्षम होता है। अतः उच्च शिक्षा में soft skills को अलगअलग गतिविधियों या अल्पकालिक कार्यक्रमों तक सीमित - अधिगम प्रक्रिया का नियमित हिस्सा ब-रखने के बजाय शिक्षणनाया जाना चाहिए।

6. शिक्षक शिक्षा में कौशल विकास की विशेष भूमिका:

शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में कौशल विकास का महत्व और भी अधिक है। शिक्षक भविष्य की पीढ़ी के ज्ञान, दृष्टिकोण, व्यवहार एवं कौशल निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में केवल शिक्षाशास्त्रीय सिद्धांतों का अध्ययन पर्याप्त नहीं है। एक आधुनिक शिक्षक को digital pedagogy, classroom management, assessment literacy, communication, inclusive education, educational technology, critical thinking तथा research skills से परिचित होना आवश्यक है। विशेष रूप से शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में-micro teaching, lesson planning, teaching practice, school internship, action research, ICT–based teaching तथा reflective practice जैसी गतिविधियों को प्रभावी रूप से लागू किया जाना चाहिए। शिक्षक शिक्षा में कौशल विकास का उद्देश्य ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना होना चाहिए जो तकनीक का केवल उपयोग न करें, बल्कि उसे शिक्षणअधिगम को अधिक प्रभावी-, समावेशी एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनाने के लिए प्रयोग कर सकें।

7. कौशल विकास और उद्योगशिक्षा के बीच संबंध-:

उच्च शिक्षा और रोजगार बाजार के बीच सामंजस्य की कमी कौशल विकास की प्रमुख चुनौतियों में से एक है। कई बार विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम में पढ़ाए जाने वाले विषयों और कार्यक्षेत्र में अपेक्षित दक्षताओं के बीच अंतर दिखाई देता है। इस अंतर को कम करने के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों और उद्योगों के बीच सहयोग आवश्यक है। Industry interaction, guest lecture, internship, apprenticeship, field visit] project work तथा placement–oriented training विद्यार्थियों को वास्तविक कार्य-परिस्थितियों से परिचित करा सकते हैं। विश्व बैंक भीjob–relevant skills के विकास के लिए industry partnerships तथा hands–on training को महत्वपूर्ण मानता है। अतः उच्च शिक्षा संस्थानों को स्थानीय उद्योगों, संस्थानों, गैरसरकारी संगठनों तथा - व्यावसायिक संगठनों के साथ सहयोग की संभावनाओं को विकसित करना चाहिए।

8. कौशल विकास के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ:

यद्यपि उच्च शिक्षा में कौशल विकास की आवश्यकता व्यापक रूप से स्वीकार की जा रही है, फिर भी इसके प्रभावी क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ हैं।

8.1 सैद्धांतिक शिक्षा पर अधिक जोर:

कई शिक्षण संस्थानों में अभी भी परीक्षा एवं पाठ्यक्रम पूर्ण करने पर अधिक जोर रहता है। इसके कारण practical learning और experiential learning को अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाता ।

8.2 प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता:

कौशलतकनीकों एवं शिक्षण विधियों का प्रशिक्षण आवश्यक है। आधारित शिक्षा के लिए शिक्षकों को भी नई- यदि शिक्षक स्वयं आधुनिक digital tools और experiential pedagogies से परिचित नहीं होंगे, तो कौशलआधारित शिक्षा प्रभावी रूप से - लागू करना कठिन होगा।

8.3 संसाधनों की असमान उपलब्धता:

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के उच्च शिक्षा संस्थानों में digital infrastructure, laboratories internet connectivity और training resources की उपलब्धता समान नहीं है। यह असमानता कौशल विकास के अवसरों को प्रभावित कर सकती है।

8.4 उद्योग के साथ सीमित संपर्क:

कई संस्थानों में उद्योगों एवं वास्तविक कार्यक्षेत्र के साथ नियमित संपर्क सीमित है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों को classroom learning और workplace requirements के बीच अंतर का अनुभव देर से होता है।

8.5 मूल्यांकन प्रणाली:

यदि मूल्यांकन मुख्यतः लिखित परीक्षा और स्मृतिआधारित प्रश्नों पर केंद्रित रहेगा-, तो विद्यार्थी भी उसी प्रकार की तैयारी करेंगे। कौशल विकास के लिए performance based assessment project, presentation, portfolio और practical demonstration को उचित महत्व देना आवश्यक है।

9. कौशललिए आवश्यक सुधार आधारित उच्च शिक्षा के-:

उच्च शिक्षा को कौशलआधारि-त बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय उपयोगी हो सकते हैंकृ

1.पाठ्यक्रम में skill–based तथा value–added courses को पर्याप्त स्थान दिया जाए।

2.प्रत्येक कार्यक्रम के learning outcomes को स्पष्ट रूप से निर्धारित किया जाए।

3.internship, Apprenticeship एवं field–based learning को बढ़ावा दिया जाए।

4.digital literacy तथा emerging technologie से संबंधित कौशलों को विषयों के साथ जोड़ा जाए।

5.विद्यार्थियों के लिए communication, leadership, entrepreneurship और problem–solving आधारित प्रशिक्षण आयोजित किए जाएँ।

6.उद्योग एवं उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच नियमित Academic–industry interaction विकसित किया जाए।

7.शिक्षकों के लिए नियमित Faculty Development Programmes आयोजित किए जाएँ।

8.practical एवं competency–based assessment को बढ़ावा दिया जाए।

9.ग्रामीण एवं संसाधनवंचित विद्यार्थियों के लिए डिजिटल एवं कौशल प्रशिक्षण के अतिरिक्त अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।-

10.कौशल विकास को रोजगार तक सीमित न रखकर lifelong learning एवं आत्मनिर्भरता से जोड़ा जाए।

UGC की वर्तमान पहलों में National Credit Framework, Academic Bank of Credits, multidisciplinary education तथा innovative pedagogical approaches जैसी व्यवस्थाएँ उच्च शिक्षा को अधिक flexible और learner–centric बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण हैं।

10. चर्चा)Discussion)

उच्च शिक्षा में कौशल विकास को केवल रोजगार प्राप्ति के साधन के रूप में देखना इसके व्यापक महत्व को सीमित करना होगा। वास्तव में कौशल व्यक्ति को बदलती परिस्थितियों में सीखने, अनुकूलित होने और प्रभावी ढंग से कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है।

वर्तमान समय में रोजगार का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। तकनीकी परिवर्तन के कारण कुछ पारंपरिक कार्यों का स्वरूप बदल रहा है, जबकि नए प्रकार के रोजगार और कार्यक्षेत्र विकसित हो रहे हैं। ऐसी परिस्थिति में किसी एक निश्चित कौशल का ज्ञान जीवनभर पर्याप्त नहीं हो सकता। इसलिए विद्यार्थियों में "learning to learn" की क्षमता विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। कौशल विकास का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता है। जब विद्यार्थी किसी कार्य को स्वयं करने का अनुभव प्राप्त करता है, तो उसके भीतर आत्मविश्वास विकसित होता है। Project work, internship, field experience तथा practical training विद्यार्थियों को यह अनुभव प्रदान करते हैं कि वे अपने ज्ञान को वास्तविक परिस्थितियों में उपयोग कर सकते हैं। तीसरा महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक एवं आर्थिक विकास है। कुशल मानव संसाधन किसी भी अर्थव्यवस्था की उत्पादकता बढ़ाने में योगदान करता है। उच्च

शिक्षा और skills systems प्रतिभा निर्माण, innovation, productivity और economic engagement में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में कौशल विकास को उच्च शिक्षा से जोड़ने की आवश्यकता इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि देश की युवा आबादी को productive workforce में परिवर्तित करने के लिए शिक्षा और रोजगार के बीच मजबूत संबंध आवश्यक है। इस दिशा में NEP 2020 का multidisciplinary, vocational एवं skill oriented approach महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि कौशल विकास का अर्थ केवल technical training नहीं है। यदि तकनीकी दक्षता के साथ ethical values, social responsibility, communication, critical thinking और creativity विकसित नहीं होती, तो शिक्षा का उद्देश्य अधूरा रह जाएगा। UGC की उच्च शिक्षा संबंधी रूपरेखा भी ज्ञान एवं कौशल के साथ values, creativity और broader capabilities पर जोर देती है।

अतः भविष्य की उच्च शिक्षा में ज्ञान ,कौशल ,मूल्य , अनुभव का संतुलित समन्वय आवश्यक है।

11. निष्कर्ष (Conclusion)

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि उच्च शिक्षा में कौशल विकास की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी है। वर्तमान समय में केवल शैक्षणिक डिग्री प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों को रोजगार, उद्यमिता, सामाजिक जीवन तथा बदलती तकनीकी परिस्थितियों के लिए तैयार करने हेतु ज्ञान के साथ व्यावहारिक कौशलों का विकास आवश्यक है। कौशल विकास विद्यार्थियों की रोजगारपरकता बढ़ाने के साथसाथ उनके आत्मविश्वास-, समस्यासमाधान क्षमता-, नेतृत्व, संचार, रचनात्मकता तथा आत्मनिर्भरता को भी विकसित करता है। उच्च शिक्षा संस्थानों को इस दिशा में पाठ्यक्रम, शिक्षणपद्धति-, मूल्यांकन, internship, apprenticeship, industry interaction तथा digital learning में आवश्यक परिवर्तन करने होंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा की विभिन्न पहलें उच्च शिक्षा को अधिक multidisciplinary, flexible, outcome oriented और skill based बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि कौशल विकास को उच्च शिक्षा का अतिरिक्त या वैकल्पिक घटक न मानकर उसकी मूल शैक्षिक प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा बनाया जाना चाहिए। यदि उच्च शिक्षा संस्थान विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ कौशल, अनुभव, मूल्य एवं निरंतर सीखने की क्षमता प्रदान करने में सफल होते हैं, तो वे न केवल रोजगार योग्य बनेंगे, बल्कि राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में भी अधिक प्रभावी योगदान दे सकेंगे।

12. सुझाव (Suggestions) :

अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैंकृ

1.उच्च शिक्षा के प्रत्येक पाठ्यक्रम में स्पष्ट skill based learning outcomes निर्धारित किए जाएँ।

2.विद्यार्थियों को कमकम एक व्यावहारिकध्व्यावसायिक कौशल में दक्ष बनाने के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ।-से-

3. Internship और apprenticeship को अधिक प्रभावी एवं अनुभवआधारित बनाया जाए।-

4.शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में digital pedagogy एवं emerging technologies को उचित महत्व दिया जाए।

5.उच्च शिक्षा संस्थानों में entrepreneurship एवं innovation cells को सक्रिय किया जाए।

6.ग्रामीण एवं वंचित विद्यार्थियों के लिए digital skill training की विशेष व्यवस्था की जाए।

7.मूल्यांकन प्रणाली को केवल theoretical examination तक सीमित न रखकर competency–based बनाया जाए।

8.स्थानीय उद्योगों एवं संस्थानों के साथ institutional collaboration विकसित किया जाए।

9.शिक्षकों के लिए नियमित skill upgradation एवं Faculty Development Programmes आयोजित किए जाएँ।

10.कौशल विकास को learning employability तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा जाए।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. Government of India (2020) National Education Policy 2020. Ministry of Education, Government of India

2. University Grants Commission. Learning Outcomes–Based Curriculum Framework for Undergraduate Education, University Grants Commission, New Delhi.
3- University Grants Commission. National Credit Framework. University Grants Commission,New Delhi.
4. University Grants Commission. Curriculum and Credit Framework for Undergraduate Programmes. University Grants Commission, New Delhi.
5- University Grants Commission. Guidelines for Institutional Development Plans for Higher Education Institutions. University Grants Commission, New Delhi.
6- University Grants Commission. Key Initiatives and Guidelines for Higher Education. University Grants Commission, New Delhi.
7- World Bank. (2026). Education – Skills. World Bank Group.
8. World Bank. Skills and Workforce Development. World Bank Group.
9. World Bank. Tertiary Education and Skills. World Bank Group.
10. UNESCO. Reports and publications on education, skills development and lifelong learning.